RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 2 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 25 मार्च, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 2, 22-25 मार्च 2018 तदनुसार 12 चैत्र सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

प्राप्तव्य की प्राप्ति का प्रकार

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यत्सानोः सानुमारुहद् भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्।
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति।।

–ऋ. १।१०।२

शब्दार्थ–**यत्** = जब **सानोः**= एक शिखर से **सानुम्** = दूसरे शिखर को **आ+अरुहत्** = चढ़ाई करता है और **भूरि** = बहुत **कर्त्वम्** = करने योग्य अवशिष्ट कर्त्तव्य को **अस्पष्ट** = देख पाता है **तत्** = तब **इन्द्रः** = आत्मा **अर्थम्** = अर्थ को, अभिप्राय को, प्राप्तव्य को **चेतति** = जान पाता है, समझता है और **यूथेन** = यूथ के साथ **वृष्णिः** = बरसने-बरसाने वाला होकर [धर्ममेघ समाधि से सम्पन्न होकर] **एजति** = पुरुषार्थ करता है।

व्याख्या–जिन्होंने कभी पर्वत की पैदल यात्रा की हो, वे इस मन्त्र में वर्णित वस्तु का आस्वाद ले सकते हैं। मनुष्य समझता है, यही सामने वाला शिखर है, इस पर चढ़ गये तो बस मैदान मार लिया। जब उस पर चढ़ जाते हैं, तब सामने एक और उच्चतर शिखर दृष्टिगोचर हो रहा होता है। उस समय उसे अपने अगले कर्त्तव्य का भान होता है–**'भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्'** = भूरि कर्त्तव्य को स्पष्ट देखता है। सच पूछो, पिछला किया भूल जाता है। अगला कर्त्तव्य उसके मस्तिष्क पर छा जाता है। जीवन का सारा व्यवहार इसका प्रमाण है। दिन-प्रतिदिन नये-नये कर्त्तव्य सामने आते हैं। एक कर्त्तव्य अगले कर्त्तव्य की सूचना-सी देता है, तब कहना पड़ता है कि–**'तदिन्द्रो अर्थं चेतति'** = आत्मा को तभी जीवन-संग्राम का अर्थ सूझता है। विभ्रम के अभिलाषी को संग्राम का सामना करना पड़ जाता है, तब क्या वह हिम्मत हार जाता है ? नहीं ? वरन् वह भगवान् से कहता है–**'सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम्'** [ऋ० १।९।५] = प्रभो! हमारी हिम्मत बढ़ा, आगे जाने का साहस दे। आगे तो अद्भुत श्रेष्ठ धन है। तब पुनः कहता है–**'ब्रह्म च नो वसो सचेन्द्र यज्ञं च वर्धय'** [ऋ० १।१०।४]–सबको वास देने हारे! हमारी विनती को स्वीकार कर और अज्ञानवारक प्रभो! हमारे यज्ञ को बढ़ा।

उसे ज्ञात है कि भगवान् उनकी सहायता करता है जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं। इस भाव से वह समाधिसाधन में लगता है। उसके लिए एक-एक शिखर को चढ़कर पार करता है। आसन, प्राणायाम से प्रत्याहार, प्रत्याहार को पाकर धारणा में धरना लगाता है। धारणा के धरने से उसे ध्यान आता है, ध्यान समाधि तक पहुँचाता है। आसन-जय पर प्राण शान्त होने लगते हैं, अर्थात् आसन-शिखर से प्राणायाम की चोटी दीखती है। प्राणायाम-चोटी से प्रत्याहार का शिखर और इसी प्रकार ज्यों-ज्यों वह ऊपर चढ़ता है, त्यों-त्यों उसे अगली भूमियाँ दिखाई देती हैं–यह है–**'यत्सानोः सानुमारुहद् भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्'** मूलाधार से प्राण ऊपर को चला। एक चक्र में अटका, उसे पार किया, अगले का ज्ञान हुआ। ब्रह्मरन्ध्र पर पहुँचकर प्राप्तव्य का पता लगा। इस प्रकार अभ्यास करते-करते धर्ममेघ समाधि की सिद्धि होती है। उस धर्ममेघ समाधि से सम्पन्न होकर साधक पुरुषार्थ करता है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋष्ववीरस्य बृहतः पतिर्भूः।
विश्वमाप्रा अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमद्धा नकिरन्यस्त्वावान्।।

–ऋ० २.५२.१३

भावार्थ–परमेश्वर आकाश और सारी पृथिवी को प्रत्यक्ष मापने और जानने वाला है, बड़े-बड़े दर्शनीय वीर और नक्षत्रों वाले महान् द्युलोक का भी स्वामी है। सारे मध्यलोक को जिस प्रभु ने व्याप्त कर रखा है। यह निश्चित सत्य है, कि उस जैसा दूसरा कोई तीनों लोकों में न हुआ, न है और न ही होगा।

त्वं विश्वस्य धनदा असि श्रुतोयई भवन्त्याजयः।
तवायं विश्वः पुरुहूत पार्थिवोऽवस्युर्नाम भिक्षते।।

–ऋ० ७.३२.१७

भावार्थ–हे परमात्मन्! सारे जगत् में जितने मनुष्य हैं ये सब, आपसे ही अपनी रक्षा चाहते हैं और आपसे ही अनेक प्रकार का धन ऐश्वर्य माँगते हैं। आप उनके कर्मानुसार उनकी रक्षा करते और धन भी देते हैं। जिस धन के लिए संसार में अनेक युद्ध हुए और होते रहते हैं, उस धन के प्रदाता भी आप ही हैं, बड़े-बड़े राजा महाराजा भी आपके आगे सब भिखारी हैं। आप अपने प्यारे भक्तों से प्रसन्न होकर सब धनादि पदार्थ देकर इस लोक में सुखी करते, और परलोक में भी मुक्ति सुख देकर सदा सुखी बनाते हैं।

बलं धेहि तनूषु नो बलमिन्द्रानळुत्सु नः।
बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि।।

–ऋ० २.५२.१३

भावार्थ–हे महा समर्थ परमेश्वर! कृपा करके हमारे शरीरों में बल प्रदान करें, जिससे हम आपकी भक्ति और वेद-विचार, प्रचारादि कर सकें, ऐसे ही हमारे पुत्र, पौत्रादि सन्तानों में भी बल और जीवन प्रदान करें। जिससे उनमें भी, आपकी भक्ति और वेद-विचारादि उत्तम साधनों का सद्भाव बना रहे, और जिससे सब लोग आस्तिक और आपके प्रेमी भक्त बनकर सदा सुख के भागी बनें। भगवान्! आप ही सबके बलप्रदाता हो, इसलिए आपसे ही बल की हम लोग प्रार्थना करते हैं।

माँ का आँचल

ले.-जगमाल सिंह

ओ३म् विश्वानि देव सवित-र्दुरितानि परासुव।

पितृ पक्ष में माँ की बात लिख रहा हूं। मेरा मानना है कि पितृ शब्द में माँ की शक्ति है। माँ का स्थान संसार में सर्वोच्च है। माता-पिता को परमेश्वर का साक्षात् प्रतिनिधि मानकर गृहस्थों को उन्हें प्रसन्न रखना चाहिऐ। वही सपूत है जो माता-पिता की सेवा तथा आज्ञा पालन करते हैं। माता-पिता के सामने कभी हंसी दिल्लगी तथा किसी प्रकार का दंगा या क्रोध नहीं करना चाहिये।

माँ सृष्टि के अणु परमाणु की जननी है। माँ प्रत्येक जीव की आदि अनादि अनुभूति है। माँ की देह का विस्तार ही हम सब की काया है। हम सबका विस्तार माँ के कारण ही है। माँ न होती तो हम न होते।

माँ स्वभाविक ही दिव्य है, देवी है, वरेण्य है। आराधना के योग्य है। सभी लोक जगत, कीट पतंगे तथा समस्त प्राणी माँ का विस्तार हैं। ऋषियों ने 'देवी सर्वभूतेषु, मातृ रूपेण, संस्थिता' बताकर 'नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमोनमः कहकर हमेशा माँ को नमस्कार किया है। माँ का रस, माँ का रक्त और पोषण ही प्रत्येक जीव का मूल आधार है।'

माँ है मोहब्बत का नाम। माँ को हजारों सलाम।

कर दे फिदा जिन्दगी, आये जो बच्चों के काम।

हंस के उठाए ग़म, बैठे न हार के।

पाले ज़माने को वो, अपने को मार के।

भूख मिटाये सदा प्यास बुझाये सदा प्यार लुटाये सदा

मांगे न कीमत नादान, माँ को हजारों सलाम।

माँ के चरण छूना दुनियां की शान है माँ

हमको मिला है जो भी ममता का दान है माँ

बाग लगाती है माँ, फूल खिलाती है माँ

विपदा उठाती है माँ

देती है खुशियां तमाम, माँ को हजारों सलाम।

चाहे भिखारिन हो, खाली हों हाथ भी माँ

माँ तो रहेगी माँ, कोई हो जात भी माँ

ममता की छांव तले, दीप हजारों जलें,

गोदी में उसकी पलें सारे ऋषि

सबकी माँ कर दे फिदा जिन्दगी आये जो बच्चों के काम।

माँ को हजारों सलाम, माँ है मोहब्बत का नाम।

पृथ्वी भी माँ है। इसके अंगभूतों से सभी जीव निर्मित हैं। वही मूल है, वही आधार है। यह पर्वतों को धारण करती है, मेघों को प्रेरित करती है।

वेदों में मातायें आपः मातरम् है। संसार के जड़ चेतन को जन्म देने वाली आपः मातायें हैं। 'विश्वश्य स्थार्तुजगतो जननिः।' प्रकृति ने औरत को अपार करुणा एवं प्रेम से वशीभूत किया है। जिसका सबसे प्रबलतम पक्ष है। उसका माँ होना। माँ अपने भाग्य के प्रतिकूल परिस्थितियों को झेल लेती है परन्तु अपने बच्चों पर किसी प्रकार कष्ट न आये, अपने प्राण न्यौछावर करने को हमेशा तैयार रहती है। औरत ही घर की लक्ष्मी होती है। जो व्यक्ति अपनी उन्नति एवं सौभाग्य की कामना करते हैं, उन्हें औरतों का सम्मान करना चाहिये। जिन घरों में औरतें सम्मानित होती हैं। उनमें देवता रमण करते हैं। किन्तु जिन घरों में ये अपमानित होती हैं। उनमें सब क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं। स्त्रियों द्वारा शापित घर नष्ट हो जाते हैं। औरतें सम्मान के योग्य हैं। पुरुषों को उनका सम्मान करना चाहिये। धर्म औरतों पर ही निर्भर है। ये जगजननी हैं। अथर्ववेद में वर्णित है-'यो वा शिव तमो रसस्तस्या भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः।'

इस संसार में लोगों ने मिलकर बड़े-बड़े मन्दिर, गिरिजाघर तथा मस्जिदें बनवाईं। लेकिन माता-पिता का निर्माण कोई नहीं कर सकता। परमेश्वर निराकार है। सर्वव्यापक है। परमेश्वर को किसी ने नहीं देखा। परन्तु माता-पिता तो आपके सामने साकार हैं। उसका अपमान मत करो। माता-पिता के चरण छूकर आशीर्वाद लीजिये। प्रभु के आशीर्वाद से ज्यादा ताकत मिलेगी क्योंकि प्रभु भी ऐसा ही चाहते हैं। जितने भी संकट हैं। संसार में माता-पिता के आशीर्वाद के बिना ही हैं। माता-पिता अपनी औलाद का निस्वार्थ पालन पोषण करते हैं। अपने जीवन की सारी खुशियां, सारी सम्पत्ति अपने बच्चों की उन्नति में लगा देते हैं। जितनी भी कमियां, बुराइयां अपने बच्चों में होती हैं। कभी उजागर नहीं करते। यदि आप सभी अपने माता-पिता के आश्रय में रहोंगे, सेवा करोगे, आज्ञा पालन करोगे, तो किसी भी देवी देवता या अंधविश्वासी पत्थरों में सिर मारकर पूजा अर्चना करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

यदि वृद्ध माता-पिता हैं और उनकी आँखों में औलाद के कारण आंसू आ गये तो हम मनुष्य कहलाने योग्य नहीं। औलाद को अपने माता-पिता के सामने ऐसे रहना चाहिये कि माता-पिता औलाद को देखकर रोमांचित हो उठें और गर्व महसूस करें।

पीढ़ी दर पीढ़ी माता-पिता का नाम चलता है। जिसको कोई मिटा नहीं सकता। अधिकतर लोग राम-कृष्ण जी को अवतार मानते हैं तथा उनकी पूजा-अर्चना करते हैं। परन्तु उनके चरित्र को ध्यान में नहीं लाते कि राम और कृष्ण जी ने अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन किया तथा समग्र राष्ट्र की सेवा की।

महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि जितना माता सन्तानों पर प्रेम तथा हित करना चाहती है। इतना अन्य कोई नहीं कर सकता।

प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य मातृमान।

धन्य है माता जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो। तब तक सुशीलता से उपदेश करती है। गाय भी माता है। आप देख सकते हैं कि गाय अपने बछड़े को किस प्रकार पालती है। कितने प्यार से चाटती है। छोटे से छोटा पक्षी भी तिनका-तिनका चुनकर घोंसला बनाते हैं तथा दाना चुगकर माँ अपने बच्चों को पालन पोषण करती है। मानव यह देखकर क्या अपने माता-पिता के बारे में नहीं समझ सकता। जिनके मन में अपने माता-पिता के प्रति घृणा है या मन में रही है, वे अपना सुखी जीवन नहीं बिता सकते। जिनको अपने माता-पिता की बातें कड़वी तथा दूसरों की बातें अच्छी लगती हैं। उनका विनाश निश्चित है। अपने माता-पिता की अवहेलना करने वाले दुखों से मुक्त नहीं हो सकते।

माँ की महिमा अपार है। मातृ ऋण से उऋण होना कठिन है। परन्तु आधुनिक परिपेक्ष्य में सारी मान्यताएं बदल गई हैं। सन्तान शिक्षा प्राप्त करके धन कमाना और अपने ऊपर व्यय करना ही अभीष्ट मानती है। इसका एक दृष्टान्त प्रस्तुत है :-

बच्चा (शिशु) जब गर्भ में होता है, माँ का नाम गर्भ में ही जुड़ जाता है। बच्चा बड़ा होता है, 3-4 वर्ष का स्कूल में विद्या अर्जित करने के लिये जाता है। जब छुट्टी होती है माँ दरवाजे पर खड़ी होकर बेटे के आने की राह देखती रहती है। एक दिन मूसलाधार वर्षा हो रही थी। जब बेटा घर भीगता हुआ आया, पिता जी बोले, बेटा छाता लेकर क्यों नहीं गये। आ गया भीगता हुआ। सारी किताबें भिगो डाली। दौड़ी-दौड़ी बहन आयी। भैया आ गया भीगता हुआ। छाता लेकर जाता कितना अच्छा होता। दौड़ी-दौड़ी माँ आई। बोली, हाय मेरा बच्चा कितना भीग गया। क्या 5 मिनट वर्षा रुक नहीं सकती थी। चल बेटा चल, जल्दी-जल्दी चल। दूसरे कपड़े बदल दूं। कितना करुणादायक माँ का स्वर था। कोई सवाल नहीं किया। माँ जल्दी-जल्दी अपने आंचल से सारे शरीर को पोंछती चली गई।

जब बेटा दसवीं कक्षा में पहुंच गया, खर्चे बढ़ते गये। बेटा माँ के आंचल से बंधे पैसे खोंस लेता। माँ प्यार से चिल्लाती रहती। कभी बापू की जेब से सौ रुपये का नोट निकाल लेता। बापू थोड़ा प्यार का गुस्सा दिखाकर चुप रह जाते।

जब बेटा बड़ा हुआ, सर्विस लग गई, शादी हो गई। जब भी बेटा बाहर जाता पिता जी से पूछता आपके लिये क्या लाऊँ। बहन कहती मेरे लिये एक अच्छा सा सूट लेकर आना। जब माँ से पूछता, माँ प्यार से कहती, बेटा मुझे कुछ नहीं चाहिये। जैसे जा रहे हो ऐसे ही लौटकर आ जाना।

कौन सा बड़ा रिश्ता है माँ से संसार में ? मैं युवा वर्ग से जानना चाहता हूँ कि शादी के बाद क्या हो जाता है कि बूढ़े माता पिता को सौ रुपये भी जेब से निकाल कर देना कठिन लगता है। ज़रा युवा वर्ग विचार करके देखे तथा अपने बचपन में झांके।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

आदर्श मर्यादा के पालक-श्रीराम

भारत में प्रतिवर्ष चैत्र सुदि नवमी को राम नवमी का पर्व बड़े उत्साह और भक्तिभाव से मनाया जाता है और भारत भर का हिन्दू चाहे वह किसी भी समुदाय से सम्बन्ध क्यों न रखता हो, इस दिन भगवान श्रीराम का जन्मदिवस मनाकर अपने आपको कृत-कृत्य समझता है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि भारत में और भी बड़े-बड़े महापुरूष तथा ऋषि-मुनि हुए हैं किन्तु भगवान राम के प्रति आस्था रखने वाले लोगों की संख्या इतने लाख वर्षों के बीत जाने के बाद भी कम नहीं हुई और न ही उनकी मान्यता में कोई कमी आई है। यदि इसके कारणों पर विचार करें तो यह पता चलता है कि भगवान राम का जीवन कुछ इस तरह से भारत के जन-जन के हृदय पटल पर अंकित हो गया है कि उसे काल की कोई अवधि मिटा नहीं सकती। इस देश के लोग श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि वह मनुष्य जो मर्यादा बना सकता है। भगवान राम उसकी अन्तिम सीमा थे। वह पुरूष भी उत्तम थे और उनकी मर्यादाएं भी उत्तम थी। उन्होंने मानव मात्र के लिए मर्यादा पालन का जो आदर्श प्रस्तुत किया था वह संसार के इतिहास में कहीं और नहीं मिल सकता।

उदाहरण के लिए उन्होंने अपना पहला आदर्श आज्ञाकारी पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया। उनके पिता राजा दशरथ अपनी रानी कैकेयी से वचनबद्ध थे। रानी कैकेयी ने ठीक उस समय जब राम का राज्याभिषेक होने वाला था राम को वनवास और अपने पुत्र भरत के लिए राज्यतिलक की माँग कर दी। दशरथ नहीं चाहते थे किन्तु अपने पिता के वचन का पालन करने के लिए भगवान राम ने एक पल में राज-पाठ को त्याग दिया और वनवासी बनकर वनों को चले गए। पूरे चौदह वर्ष उन्होंने वन में बिताए ऐसा आदर्श कौन प्रस्तुत कर सकता है। संसार में जितने भी युद्ध और लडाईयाँ अब तक हुई हैं वह राज प्राप्ति के लिए हुई हैं किन्तु भगवान राम ने जो आदर्श प्रस्तुत किया उसकी तो कल्पना भी नहीं कर सकता।

दूसरा आदर्श उन्होंने एक आदर्श भाई का प्रस्तुत किया। यद्यपि भरत की माता कैकेयी ने उन्हें राज-पाट के बदले वनवास दिलाया था किन्तु श्रीराम ने भरत से न ईर्ष्या की और न द्वेष। वह निरन्तर भरत के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते रहे और उसे राज-काज सम्भालने की प्रेरणा करते रहे। उन्होंने उसे कभी अपना प्रतिद्वन्दी नहीं समझा। आज के समय में कोई इस प्रकार का आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। आज के इस समय में जब जमीन जायदाद के लिए भाई-भाई के खून का प्यासा है। पतन के इस समय में मर्यादा पुरूषोत्तम राम के द्वारा स्थापित आदर्श भ्रातृप्रेम के आदर्श को अपनाकर उनसे प्रेरणा ले सकते हैं।

तीसरा आदर्श उन्होंने आदर्श पति का प्रस्तुत किया। वह चौदह वर्ष वनों में रहे और वनवासी होकर रहे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और वनों में रहने वाले ऋषियों-मुनियों की सेवा का व्रत लिया। जो राक्षस ऋषियों के यज्ञ में विघ्न डालते थे उन राक्षसों का संहार किया। इस काल में उन्होंने गृहस्थ की चिन्ता नहीं की अपितु अपनी सम्पूर्ण शक्ति को राक्षसों का संहार करने के लिए लगाया। रावण ने जब उनकी धर्मपत्नी सीता को चुराने का दुस्साहस किया तो भगवान श्रीराम ने इस दुष्कृत्य के लिए रावण का सर्वनाश कर दिया। सबसे बड़ी बात यह है कि वह एक आदर्श राजा थे। आज भी लोग राम राज्य की कामना करते हैं। राज्य तो था ही राजा के लिए किन्तु श्रीराम ने राजा का जो आदर्श प्रस्तुत किया उसे आज तक कोई भुला नहीं सकता। आज समस्त संसार राम राज्य की कामना और अभिलाषा रखता है। महात्मा गांधी भी अपने देश में राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे। राम राज्य में कोई चोर नहीं था, कोई व्यभिचारी नहीं था, कोई भ्रष्टाचारी नहीं था। किसी प्रकार का कोई कष्ट क्लेश राम राज्य में नहीं था इसीलिए सारी प्रजा सुखी थी।

संक्षेप में भगवान राम की लाखों वर्ष पश्चात भी भारतीय जनमानस में स्मृति बने रहने का मूल कारण उनका अपना आदर्श जीवन है। ऐसा आदर्श महापुरूष हमें समूचे इतिहास में कभी प्राप्त नहीं हो सकेगा। यही कारण है कि भगवान राम हिन्दू संस्कृति और सभ्यता के एक अभिन्न अंग बन गए हैं।

राम नवमी के शुभ पर्व पर भगवान राम का पवित्र और आदर्श जीवन यही प्रेरणा देता है कि हम उनकी मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने जीवनों, अपने परिवार और अपने देश को सुखी और शान्तिमय बनाएं। इस वर्ष 25 मार्च को राम नवमी का पर्व आ रहा है। हिन्दू संस्कृति से जुड़े लोग अपने-अपने ढंग से इस पर्व को मनाते हैं। नगर कीर्तन तथा शोभायात्राओं के माध्यम से श्रीराम की झाँकियां निकाली जाती हैं। सारे देश में इस पर्व को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है परन्तु आज हमें विचार करना है कि हम कहां तक मर्यादा पुरूषोत्तम राम की मर्यादाओं तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। भगवान राम ने जो आदर्श और भ्रातृप्रेम के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं उन आदर्शों को त्याग की भावनाओं को अपनाएं बिना हम राम राज्य की कल्पना भी नहीं की सकते। भगवान राम के गुणों को, उनके आदर्शों को अपनाकर हम राम नवमी के पर्व को सार्थक कर सकते हैं।

25 मार्च 2018 को मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम का जन्मदिवस है। यह दिन भारतवर्ष के लिए प्रेरणा दिवस है। हम अपने घरों में किस प्रकार का वातावरण चाहते हैं, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। राम का भ्रातृप्रेम, पिता की आज्ञा का पालन करना, अपनी मर्यादाओं का पालन करने के लिए चट्टान की तरह अड़िग रहना, ये गुण हम श्रीराम के जीवन से सीख सकते हैं। श्रीराम का जीवन हमें सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी किस प्रकार धैर्य से काम लिया जाता है। सुख और दु:ख में किस प्रकार समान भाव से रहा जाता है। आज जमीन-जायदाद के लिए भाई-भाई के खून का प्यासा है, अपने पिता तक की हत्या कर देता है, ऐसे में हम किस प्रकार मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के अनुयायी हो सकते हैं। अगर हमारी श्रीराम के प्रति सच्ची आस्था है तो हमें अपने घरों में वही मर्यादाएं, भ्रातृप्रेम तथा बड़ों के प्रति आदर्श भावनाएं स्थापित करनी होंगी। रामनवमी का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति लाखों वर्षों के बाद भी अपने यश के द्वारा जीवित रह सकता है। इसी का प्रतीक है कि लाखों वर्षों के बीत जाने पर भी पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ रामनवमी का पर्व मनाया जाता है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन् काममापृण।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे।।
-ऋ. १.५७.५

भावार्थ-हे समर्थ प्रभो! आप महाबली हो, यह समग्र पृथिवी और यह बड़ा द्युलोक आपने ही बनाया है। यह पृथिवी आदि लोक लोकान्तर हमें अनुमान द्वारा बता रहे हैं, कि हमारा कर्ताधर्ता सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर है, क्योंकि हम देखते हैं कि जड़ से अपने आप ही कोई पदार्थ उत्पन्न नहीं होता, चेतन जीव की इतनी शक्ति नहीं, कि इस सारी पृथिवी और द्युलोक, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति आदि लोक लोकान्तरों को उत्पन्न कर सके। इसलिए हम स्तोता, आपकी ही स्तुति प्रार्थना उपासना करते हैं, आप हमारी कामनाओं को पूर्ण करें।

मैं ईश्वर को जानता हूं

ले.-मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

ईश्वर है अथवा नहीं? ईश्वर की सत्ता अवश्य है। क्या आप उसे जानते हैं? हां, मैं ईश्वर को जानता हूं। ईश्वर कैसा है ?

ईश्वर संसार में सबसे महान है। वह अन्धकार से पूरी तरह मुक्त है अर्थात् वह अन्धकार से सर्वथा दूर है। वह आदित्य वर्ण अर्थात् सूर्य के समान प्रकाशमान ज्योतिस्वरूप, ज्ञानस्वरूप व आनन्स्वरूप आदि असंख्य गुणों वाला है। मनुष्य तब तक मृत्यु से पार नहीं जा सकता। जब तक कि वह ईश्वर को जान न ले और प्राप्त न कर ले। मृत्यु से पार जाने का अर्थ है कि मृत्यु पर विजय प्राप्त करना। मृत्यु पर विजय तब होती है। जब मनुष्य मृत्यु से घबराये न और मुस्कराकर उसका स्वागत करे। ऐसा कब होता है कि जब कि मनुष्य ईश्वर, आत्मा और जन्म व मृत्यु के चक्र के यथार्थ रहस्य को जान लेता है। इन्हें जान लेने पर मनुष्य मृत्यु के पार चला जाता है। मृत्यु के पार क्या है ? इसका उत्तर है कि मृत्यु के पार मोक्ष है। यह मोक्ष ऐसा है कि इसमें दुःख का लेश मात्र भी नहीं है। मोक्षावस्था में मनुष्य का आत्मा ईश्वर के सान्निध्य में रहकर आनन्द का भोग करता है। उसकी सभी इच्छायें व अभिलाषायें पूर्ण हो जाती हैं। वह जन्म व मरण के दुःखरूपी चक्र से मुक्त हो जाता है। मोक्ष की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष होती है। इसके बाद मनुष्य पुनः मनुष्य योनि में जन्म लेता है और वेदाध्ययन सहित श्रेष्ठ कर्मों को करके पुनः जीवनोन्नति कर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है व करता है। हमने जो उपर्युक्त विचार लिखे हैं। वह हमारे नहीं अपितु ईश्वर द्वारा यजुर्वेद के 31वें अध्याय के मन्त्र संख्या 18 में मनुष्यों को उपदेश करते हुए बताये गये हैं। वेद स्वतः प्रमाण होने से यह वेद वचन भी पूर्ण प्रामाणिक एवं मान्य है। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वज्ञ होने से निर्भ्रान्त है। वेद के सभी वचन इसी कारण प्रमाण माने जाते हैं कि वह सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ ईश्वर के कहे गये वचन हैं। तर्क व युक्ति से भी वेद में कही गई बातों की पुष्टि की जा सकती है। आईये, अब वेदमन्त्र पर भी एक दृष्टि डाल लेते हैं। वेदमन्त्र है :

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

इस मंत्र का ऋषि दयानन्द जी द्वारा किया गया पदार्थ एवं भावार्थ हम प्रस्तुत करते हैं। पदार्थ में वह लिखते हैं, ''हे जिज्ञासु पुरुष! (अहम्) मैं जिस (एतम्) इस (महान्तम्) बड़े-बड़े गुणों से युक्त (आदित्यवर्णम्) सूर्य के तुल्य प्रकाशस्वरूप (तमसः) अन्धकार वा अज्ञान से (परस्तात्) पृथक् वर्तमान (पुरुषम्) स्वस्वरुप से सर्वत्र पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हूं (तम्, एव) उसी को (विदित्वा) जान के आप (मृत्युम्) दुःखदायी मरण को (अति, एति) उल्लंघन कर जाते हैं किन्तु (अन्यः) इससे भिन्न (पन्थाः) मार्ग (अयनाय) अभीष्ट स्थान मोक्ष के लिए (न, विद्यते) नहीं विद्यमान है।

उपर्युक्त मंत्र का ऋषि कृत भावार्थ है 'यदि मनुष्य इस लोक परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सबसे अति बड़े स्वयंप्रकाश और आनन्दस्वरूप अज्ञान के लेश से पृथक् वर्तमान परमात्मा को जान के ही मरणादि अथाह दुःखसागर से पृथक् हो सकते हैं। यही सुखदायी मार्ग है। इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों की मुक्ति का मार्ग नहीं हैं।' उपर्युक्त मन्त्र के बाद के मंत्र में भी ईश्वर कैसा है, इसका उपदेश ईश्वर ने किया है। मन्त्र में बताया गया है कि 'जो यह सर्वरक्षक ईश्वर आप उत्पन्न न होता हुआ (अर्थात् जन्म न लेता हुआ) अपने सामर्थ्य से जगत् को उत्पन्न कर और उसमें प्रविष्ट होके सर्वत्र विचरता है। जिस अनेक प्रकार से प्रसिद्ध ईश्वर को विद्वान् लोग ही जानते हैं, उस जगत् के आधाररूप सर्वव्यापक परमात्मा को जान कर मनुष्यों को आनन्द को भोगना चाहिये।' वेद के इन मंत्रों में ईश्वर के स्वरूप सहित ईश्वर को जानने से होने वाले लाभों को भी बताया गया है। ईश्वर को जानने से मनुष्य मृत्यु के पार होकर मोक्ष अर्थात् अक्षय आनन्द को प्राप्त करता है। यह मोक्ष का आनन्द जीवात्माओं वा मनुष्यों को बिना ईश्वर को जाने, बिना ईश्वर की उपासना किये व साथ ही वेदोक्त कर्म किये बिना प्राप्त नहीं होता। हम यह भी अनुमान करते हैं कि जो लोग वेदों का अध्ययन नहीं करते, वेदानुसार ईश्वरोपासना, देवयज्ञ व इतर महायज्ञों को नहीं करते और जिनके गुण, कर्म व स्वभाव वेदाज्ञा के अनुरूप न होकर विपरीत हैं। वह न तो ईश्वर को यथार्थरूप में जान सकते हैं और न ही मोक्षानन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

मनुष्य जीवन पर विचार करते है तो हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य शरीर में परमात्मा ने हमें पांच ज्ञान व पांच कर्मेन्द्रियां दी हैं। ज्ञानेन्द्रियों से ईश्वर व सांसारिक ज्ञान प्राप्त कर कर्मेन्द्रियों के द्वारा हमें वेद विहित कर्मों को करना है। इससे हम ईश्वर सहित आत्मा और संसार का ज्ञान भी प्राप्त कर लेंगे और मृत्यु के पार भी जा सकते हैं तथा आनन्द का भोग भी दीर्घ काल तक कर सकते हैं। मनुष्य जीवन हमें मिला ही इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए है। ईश्वर व जीवात्मा दोनों चेतन पदार्थ हैं। ईश्वर आनन्दस्वरूप है और जीवात्मा आनन्द से रहित है। मनुष्य का जीवात्मा अविद्या व अज्ञान की अवस्था में भौतिक पदार्थों में सुख व आनन्द की खोज करते हुए उनके भोग को ही जीवन का लक्ष्य समझ लेता है। वेद पढ़ने पर ज्ञात होता है कि ईश्वरोपासना एवं वैदिक कर्मों को करने से ही अक्षय सुख मिलता है। अतः सभी मनुष्यों को वेद की शरण को प्राप्त होकर ईश्वर को जानना चाहिये और जन्म व मरण के दुःखरूपी चक्र से छूट कर मोक्षानन्द का भोग करना चाहिये।

नव विक्रमी सम्वत् के शुभारम्भ पर ज़िला आर्य सभा लुधियाना द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

ज़िला आर्य सभा, लुधियाना के तत्वावधान में सभी आर्यसमाजों ने नव विक्रमी सम्वत् 2075 के शुभारम्भ एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आर्य सीनियर सैंकडरी स्कूल मलेरकोटला हाऊस शाखा लुधियाना में विशेष कार्यक्रम किया गया। जिसमें आचार्य देव राज जी के ब्रह्मत्व में तीन कुण्डीय यज्ञ में यजमानों ने बड़ी श्रद्धा के साथ आहुतियां प्रदान की। वातावरण सुगन्धित व आनन्दमय हो उठा।

श्री विजय सरीन, अनिल गौतम, राजेन्द्र बत्रा, श्रीमती अनुपमा गुप्ता एवं पूर्णिमा रहेजा जी ने प्रभु भक्ति व महर्षि दयानन्द पर आधारित मधुर भजन सुना कर उपस्थित श्रोताओं को आनन्दित किया। ज़िला आर्य सभा की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा ने एक मधुर भजन सुनाया व अपने उदबोधन में कहा कि हम सब को आज के दिन विचार करना चाहिए कि समाज में बढ़ रहे पाखण्ड और बुराइयों को कैसे दूर किया जाए।

आचार्य देव राज जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के सही अर्थ कर समाज से अन्ध विश्वास, जाति-पात को समाप्त करने के लिए आर्य समाज को आंदोलन के रूप में स्थापित किया। जिसको भारत व विश्व के सभी धर्मों के लोगों ने विशेष कर पढ़े-लिखे विद्वानों ने स्वीकार किया व उनका साथ देते हुए आर्य समाज से जुड़ गए। आज पुनः उन्हीं आदर्शों पर स्वयं कुछ लोगों को प्रेरित करने की आवश्यकता है। श्री सतपाल नारंग, रणवीर शर्मा, श्रवण बत्रा, रमेश सूद, प्रि. राकेश अरोड़ा, जगजीव बस्सी, विनोद गांधी, जनक रानी, वजीर चंद, बृज मोहन अरोड़ा, जनक भक्त, रवि महाजन, सुमित आर्य, अरुण सूद, मनोहर लाल आदि उपस्थित रहें।

-विजय सरीन

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

हम यज्ञ, सत्संग, व उपासना से जीवन पवित्र करें

ले.-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी

जीवन में पवित्रता के साधन रुप में हाथ धोना, मुंह धोना तथा स्नान का मुख्य स्थान है तो आध्यात्मिक क्षेत्र में यज्ञ पवित्रता का मुख्य साधन है। यज्ञ के अतिरिक्त सत्संग तथा उपासना अर्थात् प्रभु की समीपता से ही पवित्रता आ सकती है। ऐसा उपदेश यह मन्त्र कर रहा है :-

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।

देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

यजुर्वेद १.३।।

१. यज्ञ से पवित्रता आती है :-

परमपिता परमात्मा उपदेश करते हुए इस मन्त्र के माध्यम से सर्व प्रथम यह कहते हैं कि हे जीव! तूने यज्ञ किया है। इस यज्ञ के द्वारा अपने आप को पवित्र बना लिया है। यहां पर शतधारेण के माध्यम से बताया गया है कि इस यज्ञ के द्वारा पवित्र होने के लिए, इस यज्ञ को करने के लिए, शतशः अर्थात् सैंकड़ों मन्त्रों के द्वारा वेद वाणियों का उच्चारण किया गया है। इन वेद के मन्त्रों का गायन किया गया है। मन्त्र कहता है कि केवल सैंकड़ों ही नहीं सहस्त्रों, हजारों वेद मन्त्रों का उच्चारण इस यज्ञ में किया गया है। वेद मन्त्रों की यह ध्वनि कानों में पड़ने से तू पवित्र हो गया है। यज्ञ की यह मन्त्रमयी प्रक्रिया सब को पवित्र कर देती है। इस प्रकार यज्ञ की इस मन्त्र युक्त-विधि से तूने इसे किया है। जिससे तेरे में पवित्रता आ गयी है। इस विधि से तूने अपने आप को, स्वयं को पवित्र बना लिया है। वैदिक संस्कृति में विचरण करने वाला व्यक्ति अपने जीवन को यज्ञ जैसा ही बना लेता है। इस प्रकार का जीवन बनाने की प्रेरणा स्रोत उसे सैंकड़ों, हजारों वेद वाणियों, वेद मन्त्रों के उच्चारण व गायन से मिलती है। इसे ही यह मानव समय-समय पर प्रयोग करता रहता है।

मन्त्र में पवित्रता का साधन यज्ञ को बताया गया है और जब इस यज्ञ को करते समय मन्त्रों को गायन कर बोला जाता है तो सोने पर सुहागे वाली बात आ जाती है। हम अपने शरीर को बाहर से तो स्नान आदि करके पवित्र कर लेते हैं किन्तु अन्दर के जीवन को, अन्दर के शरीर को पवित्र करने का आधार आध्यात्मिक ही होता है। इस कार्य के लिए उसे प्रतिदिन यज्ञ करने की आवश्यकता होती है। केवल यज्ञ मात्र से ही काम नहीं चलता, इस यज्ञ को करने के लिए अनेक वेद मन्त्रों का भी गायन करना होता है। वेद मन्त्र के गायन से हमारे शरीर के अन्दर प्रवाहित हो रहे रक्त में अल्ट्रासानिक तथा सुपरासानिक वेवज का, लहरों का सन्तुलन बन जाता है। अनुपात ठीक हो जाता है। जिससे हमारा मस्तिष्क शान्त व शीतल हो जाता है। हमारा ध्यान प्रभु की कृति में लगता है। इस प्रकार हम अन्दर से भी पवित्र हो जाते हैं। इसलिए प्रभु एक प्रकार से यह आदेश दे रहे हैं कि हमें वेदवाणी के उच्चारण के साथ, वेदवाणी के गायन के साथ भी प्रतिदिन नियमित रूप से यज्ञ करना चाहिये।

२. दो काल उपासना तथा सूर्य पवित्र करे :-मन्त्र के इस दूसरे भाग में जो उपदेश किया गया है। इसे मन्त्र ने दो भागों में बांट कर हमारे तक पहुंचाया है। मन्त्र कहता है कि:-

(क) हम दो काल प्रभु चरणों में आवें :-मन्त्र अपने दूसरे चरण के इस प्रथम भाग में हमें उपदेश करता है कि वह परम पिता सब का प्रेरक है, सब को प्रेरणा देने वाला है, सब का मार्ग दर्शक है। सब को हाथ पकड़ कर सुमार्ग पर ले जाने वाला है। वह पिता ही दिव्य गुणों का पुन्ज है। दिव्य गुणों का भण्डार है। जितने भी दिव्य गुण हैं, उन सब का केन्द्र बिन्दु वह प्रभु ही है। ऐसा प्रभु, हे मानव ! तुझे अवश्य ही पवित्र करे। आध्यात्मिक रुप से पवित्र करे। जो मानव दिन में दो काल अर्थात् प्रातः व सायं, उस पिता को स्मरण करता है, उस पिता के निकट जा कर कुछ प्रार्थना करता है, उस प्रभु का स्मरण करता है। प्रभु के आशीर्वाद से उसका जीवन पवित्र बन जाता है। मानव के जीवन को पवित्र करने के लिए उपासना अर्थात् प्रभु की निकटता पाने से ऊपर कुछ भी नहीं है।

(ख) सूर्य तुझे निरोग रखे-परम पिता परमात्मा को स्मरण करने, उसकी निकटता पाने तथा यज्ञ करने से जो पवित्रता हमें मिलती है, उसे हम आध्यात्मिक पवित्रता कहते हैं। इस के पश्चात् जिस पवित्रता को हम जानते हैं, उसे शारीरिक पवित्रता कहते हैं। यह पवित्रता शरीर के स्वच्छ व निरोग होने से होती है। इस पवित्रता को देने वाला मुख्य आधार सूर्य होता है। सूर्य को मन्त्र में सविता का नाम दिया गया है। कहा गया है कि सविता देव अर्थात् सूर्य प्रातः काल उदय होता है तथा सबको कर्मों में लगा देता है। यह ज्योति का पथ देता है, सब को प्रकाश देता है। दिन भर के कार्य से निवृत होकर थका हुआ प्राणी रात्रि को विश्राम करता है। इस विश्राम के पश्चात् पुनः प्रातः काल का निमन्त्रण ले कर सूर्य आता है। दिन निकल आता है, सब ओर प्रकाश ही प्रकाश होता है। सभी लोग अपने बिस्तर को छोड़ देते हैं। पक्षी भी चहचहाने लगते हैं। बड़ा ही सुहाना दृश्य बन जाता है। इस प्रकार सब लोग जाग्रत होते हैं तथा अपने-अपने कामों में लग जाते हैं। मानो सूर्य उन्हें अपने काम करने के लिए प्रेरित कर रहा हो। इस प्रकार सूर्य जहां हमें हमारे काम में लगाता है, वहां इस सूर्य के प्रभाव से सब प्रकार के कीटाणु, सब प्रकार के रोगाणु इस सूर्य के तेज के आगे क्षीण हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार यह जगत् सूर्य के कारण रोगाणु रहित होकर पवित्र हो जाता है। अतः सूर्य हमें निरोगता व पवित्रता देता है।

३. सत्संग से उत्तम मनों वाले हों-हे मनुष्य! तूने सैंकड़ों, सहस्त्रों वेदवाणियों का स्मरण किया है। इन्हें गाया है तथा इन के साथ तूने यज्ञ किया है। इससे तूने अपने आप को पवित्र बनाया है। ऐसे पवित्र मानव के साथ तू सम्पर्क कर, ऐसे पवित्र मानव का साथ बना, ऐसे पवित्र व्यक्तित्व वाले पुरुषों का साथ करने से ही तू अच्छी प्रकार से, उत्तम विधि से पवित्र करने वाला बना है। अब तेरे अन्दर भी ऐसी शक्ति आ गयी है कि जिससे तू अपने साथ ही साथ दूसरों को भी पवित्र करने के योग्य, पवित्र करने वाला बन गया है।

यह कहावत भी है जैसे का साथ करोगे वैसा ही बनोगे। इसलिए ही माता-पिता सदा अपने बच्चों को सूझवान, दूसरों के सहायक, आज्ञाकारी तथा बुद्धिशील, मेहनती बच्चों का साथ बनाने का उपदेश देते हैं ताकि उनके बच्चे भी वैसे ही बन सकें। यह वेद मन्त्र भी कह रहा है कि हे मानव! तू यज्ञशील अर्थात् प्रतिदिन दो काल यज्ञ करने वालों को अपना साथी बना, तू उत्तम ज्ञानी को ही अपना मित्र बना। जब तू ऐसे लोगों के सम्पर्क में रहेगा तो तू भी यज्ञशील बनेगा, ज्ञानी बनेगा, वेदवाणियों का गायन करने वाला बनेगा, पवित्र बनेगा। इस प्रकार धीरे-धीरे उठते हुए, उन्नति करते हुए तू उत्थान को प्राप्त करने में सफ़ल होगा। जीवन की सिद्धियों को पाने में सफल होगा।

जो सत्संग के वातावरण में रहता है। वह व्यक्ति पापाचार से सदा दूर रहता है। जब पापों से दूर हो जावेंगे तो स्वयमेव ही हितसाधक, पुण्य के तथा पवित्र कार्यों में ही लगेंगे। यह कार्य सत्संग ही करता है, जिसके कारण हम पाप से मुक्त होकर सर्वहितकारी कार्य करते हैं। वेद के इस मन्त्र के माध्यम से यह प्रार्थना की गयी है कि हे प्रभो! ऐसी दया करो कि हमारे सब मित्र, सम्बन्धी आदि सत्संग करते हुए उत्तम तथा पवित्र मनों वाले हों। पवित्र बनने के लिए इस मन्त्र में तीन उपाय बताये गये हैं :-

(अ) यज्ञमय जीवन-हम अपने जीवन को यज्ञमय बनायें। प्रतिदिन यज्ञ करें। सदा यज्ञीय कार्यों में लगे रहें।

(आ) प्रभु की उपासना-पवित्र बनने के लिए हमें प्रभु की निकटता चाहिये। अतः हम सदा प्रभु की उपासना करें। अपना आसन प्रभु के समीप लगावें।

(ई) ज्ञानियों व यज्ञीय व्यक्तियों के सम्पर्क में रहे-प्रभु

(शेष पृष्ठ 7 पर)

नाभिकीय प्रदूषण

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

हमारे देश में जहाँ एक ओर ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। वहीं दूसरी ओर ऊर्जा के परम्परागत स्रोत घटते जा रहे हैं। ऊर्जा की पूर्ति करने के लिए नाभिकीय ऊर्जा का उपयोग किया जा रहा है। ईसा से छः सौ वर्ष पूर्व महर्षि कण्व ने इस मत का प्रतिपादन किया कि सृष्टि की उत्पत्ति परमाणु द्वारा हुई है। उन्होंने पदार्थ के उस सूक्ष्म अंग को जिसका आगे विभाजन नहीं हो सकता परमाणु की संज्ञा दी। आज से 100 वर्ष पूर्व वैज्ञानिक इस प्रकार के पदार्थ की खोज में थे। जिसे प्रज्वलित किये बिना ही ऊर्जा प्राप्त की जा सके। सन् 1905 में आइन्स्टीन ने बताया कि किसी भी वस्तु का द्रव्यमान और ऊर्जा भिन्न नहीं है। अर्नेष्ट रदरफोर्ड ने सन् 1911 में परमाणु नाभिक की खोज की। रदरफोर्ड के परमाणु मंडल के दोषो को नील बोहर ने दूर करने का प्रयत्न किया। फिर फ्रांस के डी. ब्रोगली ने आधुनिक परमाणु संरचना का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। इससे नाभिकीय रिएक्टरों का निर्माण संभव हुआ। नाभिकीय रिएक्टर एक प्रकार की भट्टी है। इसमें यूरेनियम 233, यूरेनियम 235 या प्लूटोनियम नामक पदार्थ का नियंत्रित नाभिकीय विखण्डन कराया जाता है, इससे अपार ऊर्जा प्राप्त होती है। यह ऊर्जा पूर्ण रूप से नियंत्रित होती है तथा इसकी सहायता से विद्युत उपार्जन किया जाता है। नाभिकीय ऊर्जा के तेजी से विस्तार के कारण हमारे पर्यावरण में रेडियोधर्मिता की मात्रा बढ़ रही है। अपर्याप्त सावधानी से नाभिकीय विकिरण का रिसाव होने से हमें तथा आने वाली पीढ़ी को भी घातक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है।

नाभिकीय विकिरण किसे कहते हैं?

नाभिकीय विकिरण की जानकारी के लिए परमाणु की संरचना का ज्ञान होना आवश्यक है। परमाणु की रचना इस प्रकार की है। प्रत्येक परमाणु के केन्द्र में एक नाभिक होता है। नाभिक के अन्दर धनावेशी प्रोटीन तथा आवेश रहित न्यूट्रोन होते हैं। नाभिक के चारों ओर इलेक्ट्रोन विभिन्न ओरबीट्स में चक्कर लगाते रहते हैं। किसी भी परमाणु में प्रोटोन और इलेक्ट्रोन्स की संख्या बराबर रहती है। एक तत्व के परमाणु के केन्द्र में इलेक्ट्रोन, प्रोटोन्स और न्यूट्रोन्स की संख्या समान ही रहती है। किन्तु कुछ तत्व ऐसे भी हैं जिनके परमाणुओं के नाभिक में प्रोट्रोन्स की संख्या तो समान रहती है परन्तु न्यूट्रोन्स की संख्या बदल जाती है जैसे यूरेनियम के परमाणु में प्रोट्रोन्स और इलेक्ट्रोन्स की संख्या तो वही 92 रहती है परन्तु न्यूट्रोन्स की संख्या 146, 143 और 140 हो सकती है। एक ही तत्व के विभिन्न न्यूट्रोन्स वाले परमाणुओं को समस्थानिक अथवा आइसोटोप्स कहते हैं। प्रायः भारी तत्वों के आइसोटोप्स के नाभिकों से स्वतः विकिरण का सतत उत्सर्जन होता रहता है। इस प्रक्रिया को रेडियोधर्मिता तथा रेडियो सक्रिय आइसोटोप्स से उत्सर्जित विकिरण को नाभिकीय विकिरण कहते हैं।

नाभिकीय विकिरण पर्यावरण प्रदूषण में सबसे अधिक हानिकारक है। इसका भयानक हानिकारक प्रभाव न केवल स्थानीय पर्यावरण पर पड़ता है अपितु जल मण्डलीय तथा वायु मण्डलीय पर्यावरण पर भी पड़ता है इसे ही रेडियो धर्मी प्रदूषण कहते हैं।

रेडियो धर्मी प्रदूषण की परिभाषा है, नाभिकीय पदार्थों की क्रिया-शीलता द्वारा हुए प्रदूषण को रेडियो धर्मी प्रदूषण कहते हैं।

भारत ने बीसवीं सदी के सातवें दशक में परमाणु युग में प्रवेश किया। वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों ने परमाणु ऊर्जा को पहचाना एवं शोध के विकास के फल स्वरूप विस्फोट से उसकी छिपी हुई शक्ति प्रयोग करने में सफल हुए। परमाणु शक्ति द्वारा विद्युत उत्पन्न कर मानव जीवन का सबसे अधिक हित हुआ है। किन्तु परमाणु बिजलीघरों में उत्पन्न होने वाले रेडियो सक्रिय अपशिष्टों की भयानक मात्रा इकट्ठी होने की संभावना हमारे पर्यावरण एवं जनस्वास्थ्य के लिए चिन्ता का विषय है। यह समस्या 21वीं सदी की सबसे जटिल समस्या है। रेडियो धर्मी प्रदूषण का प्रभाव सर्वप्रथम जापान ने अनुभव किया। द्वितीय विश्व युद्ध में 6 अगस्त 1945 को हिरोशिमा के तथा 9 अगस्त 1945 में नागासाकी में परमाणु बम गिराया गया। परिणाम स्वरूप इन शहरों में हजारों व्यक्ति मृत्यु के शिकार हुए और हजारों व्यक्ति घायल हो गये। वहां अब तक इस प्रदूषण का प्रभाव दिखाई दे रहा है। परमाणु बिजलीघर के विकास के साथ-साथ परमाणु ताप दुर्घटना तथा रेडियोधर्मी प्रदूषण की समस्या भी भयानक रूप से जुड़ गई है। नाभिकीय विकिरण प्रदूषण से होने वाली हानि का प्रत्यक्ष अनुभव चेरनोबिल, किश्तिय रूस, श्री माइल आइलैण्ड, ब्रिटेन, जापान आदि के लोगों ने किया है।

नाभिकीय प्रदूषण के प्रभाव-

(1) इससे जीव एवं गुण सूत्रों के लक्षणों में परिवर्तन हो जाता है। जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी में बम गिराये जाने से अधिकांश लोग मारे गये थे। बचे हुए लोगों के आनुवंशिक लक्षण बदल गए थे। वहां वर्तमान में भी अपंग बच्चे जन्म ले रहे हैं।

(2) रेडियो धर्मी प्रदूषण से गर्भाशय में ही शिशुओं की मृत्यु हो जाती है।

(3) जल मण्डल और वायु मण्डल पर परमाणु बमों के विस्फोट से जल प्रदूषण तथा वायु प्रदूषण होता है। इससे जलमण्डल एवं वायु मण्डल के जीव धारियों एवं वनस्पति पर प्रभाव पड़ता है।

(4) परमाणु भट्टियों से आस-पास के वातावरण में रेडियो धर्मी पदार्थ जहर के रूप से रिसता रहता है। यह प्रक्रिया वर्षा ऋतु में अधिक होती है। यह रेडियो धर्मी पदार्थ वायु से भूमि में पहुंचता है। वहां से भूजल में पहुंच जाता है फिर फसलों के माध्यम से खाद्य पदार्थों में पहुंच कर मनुष्यों के शरीर में पहुंच कर उसे रोगी बना देता है।

रोकने के उपाय-

1. परमाणु बम तथा नाभिकीय बमों के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाया जावे। जिससे नाभिकीय युद्ध से बचा जा सके।

2. भूमिगत वायुमण्डल में तथा जल मण्डल में परमाणु बमों के परीक्षण पर प्रतिबन्ध लगाया जा सके।

3. परमाणु बिजलीघर से उत्पन्न कचरे का विसर्जन किया जाए तथा कचरे को ऐसे क्षेत्र में दफनाया जाए जहां से रेडियो धर्मी विकिरण द्वारा जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों तथा मानव जाति को हानि न पहुंचा सके।

4. परमाणु रिएक्टर की आयु 40 वर्ष तक ही होती है। आयु पुरी होने के बाद रिएक्टरों को बन्द कर देना चाहिए।

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज जी. टी. रोड फिरोज़पुर छावनी में नव सम्वत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस आज रविवार 20 मार्च 2018 को श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा, श्री मनमोहन शास्त्री ने विधि-विधान पूर्वक विशेष यज्ञ सम्पन्न कराया तथा अपने उद्बोधन में विक्रमी सम्वत् की विशेषता एवं आर्य समाज की उपादेयता पर प्रकाश डाला तथा समस्त आगन्तुको को पर्व की शुभ कामना प्रदान की। इस अवसर पर प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री विजय आनन्द जी के सुपुत्र अजय एवं भानजे श्री भरत राणा के गाए सार गर्भित भजन उपदेश से भरपूर आनन्ददायक रहे। छोटे-छोटे बच्चों ने भी गायत्री पाठ एवं भजन कविताएं प्रस्तुत की।

इस अवसर पर यज्ञ वेदी पर श्री जितेन्द्र गणोत्रा सपत्नीक यजमान पद पर आसीन थे। श्री मित्तल जी (सपत्नीक), श्री विनोद गोयल, श्रीमति स्वर्ण चावला, श्रीमति अशोक, श्रीमति एवं श्री राजेश, श्रीमति एवं श्री राम सिंह जी, श्री अनुराग, श्रीमति एवं श्री संजीव अग्रवाल, श्री अनिल गुप्ता (कोषाध्यक्ष) श्रीमति दीपक खन्ना एवं प्रोफेसर श्री रवि सन्तोष गुलाटी सहित अनेकों अन्य गणमान्य जन उपस्थित थे। इस अवसर पर बच्चों को पारितोषिक प्रदान कर उत्साह बढ़ाया। आर्य समाज के यशस्वी महामंत्री श्री मनोज आर्य ने मंच संचालन करते हुए आर्य समाज की गतिविधियों का परिचय देते हुए पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला एवं आज के विशेष दिवस की शुभकामनाएं प्रकट की।

शान्तिपाठ एवं जलपान के साथ आज का सत्संग सम्पन्न हुआ।

-विजय आनन्द प्रधान

पृष्ठ 2 का शेष-माँ का आँचल

एक दिन अकस्मात पिता जी का देहान्त हो गया। सभी दुखी थे। केवल माँ थी जो अपने आपको संभाले हुए थी। बेटा छुट्टी पर आया। सभी क्रिया कर्म पूरा करने के बाद बेटा जाने लगा। माँ बोली, बेटा अपना तथा बहू का ख्याल रखना। मेरी फिक्र मत करना। बेटे ने माँ को दिलासा दी। माँ फिक्र मत करना, मैं आपके पास पाँच सौ रुपये महीना भेजता रहूंगा।

बेटा बहू शहर में अच्छे मकान में रहते थे। ये कभी नहीं सोचा कि माँ गाँव में अकेली है। इसको भी साथ ले जायें। क्योंकि वे बन्धन मुक्त रहना पसन्द करते थे। अचानक माँ बीमार पड़ गई। दो बेटियां विवाहित थीं। समाचार मिलते ही दोनों बहनें माँ के पास पहुंच गई। बेटा बहू अढ़ाई वर्ष हो गये, माँ को मिलने भी नहीं आ सके। धीरे-धीरे माँ की हालत गंभीर होती चली गई। केवल माँ को अपने बेटे बहू से मिलने की अभिलाषा रह गई थी।

बेटे के इन्तजार में माँ की आँखों में आँसू भरे थे। माँ दम तोड़ गई। घर में मातम छा गया। बेटियां बिलख रहीं थीं। पड़ोसी तथा रिश्तेदार ढांढस बंधा रहे थे। जनाजा तैयार था। बेटा आ गया। बहू फिर भी नहीं आई। बेटा आते ही मगरमच्छ के आँसू निकालकर बोला, मेरी माँ कहां है। कहां है मेरी माँ।

जनाजा उठने से पहले एकदम दोनों बहनें आ गईं। बोलीं, हम इसको अपनी माँ की अर्थी को कांधा नहीं देने देंगी। काश! माँ इसको कोख में ही मार डालती। हम इस प्रथा को तोड़ेंगी। हम देंगी अपनी माँ की अर्थी को कांधा। जनाजा उठाने से पहले जब माँ के कपड़े इकट्ठे किये तो देखा कि माँ के आंचल से एक पोटली बंधी थी। जब वह पोटली खोली तो उसमें से एक चिट्ठी तथा पन्द्रह हजार रुपये मिले। चिट्ठी में माँ ने लिखा था, बेटा आप कहकर गये थे कि मैं पाँच सौ रुपये हर महीने भेजता रहूंगा। आप निश्चितं रहें। आप तो पता नहीं कब आओगे। आज अढ़ाई वर्ष हो गये हैं। आप नहीं आये। बेटा, मैंने 15,000/- रुपये जमा करके रखे हैं। बेटे ये रुपये बैंक में जमा करवा देना, आड़े वक्त में काम आयेंगे। आप भी इसी प्रकार अपने बच्चों को दे देना। चिट्ठी पढ़कर बेटा माँ के आँचल में मुंह लपेट कर रोने लगा। रोता ही रहा। रोता ही रह गया।

आर्य समाज स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

आर्य समाज मन्दिर, मेन बाजार में आर्य समाज स्थापना दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर अत्यन्त धूमधाम से मनाया गया। सबसे पहले आर्य समाज के पुरोहित पं. कमलेश कुमार शास्त्री जी ने 'यज्ञ' सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् आर्य समाज के प्रागण में वरिष्ठ सदस्य पं. मदन मोहन देवगण जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर से विशेष रूप से पधारे भजनोपदेशक पं. अरुण वेदालंकार जी द्वारा ध्वज गान प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् आर्य समाज के मुख्य हाल में भजनोपदेशक पं. अरुण वेदालंकार द्वारा मधुर वाणी में भजन प्रस्तुत कर समय बांध दिया। इस अवसर पर बेटी सुमेधा ने भी एक भजन प्रस्तुत किया। अजय कुमार ने भी दो भजन प्रस्तुत किये। बाबे के कालेज आफ ऐजूकेशन के प्रिंसीपल श्री राम मोहन त्रिपाठी जी ने भी आर्य समाज के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर पूरे वर्ष साप्ताहिक यज्ञ में सबसे अधिक उपस्थिति वाले दो नवयुवकों दक्ष देवगण और आयुष गोयल को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् ऋषि प्रसाद के रूप में लंगर भी लगाया गया। मंच संचालक की भूमिका पं. कमलेश शास्त्री जी ने निभाई। इस अवसर पर डा. निर्मल कौशिक, बनारसी दास शास्त्री, रवि वर्मा, सन्तोष कुमार, काशीराम, सतीश शर्मा मन्त्री, कपिल सहूजा प्रधान ऐडवोकेट, प्रमोद कुमार गोयल, कोषाध्यक्ष, प्रो. एन. के. गुप्ता, श्रीमान (कोटकपूरा) नरेश देवगण, जगदीश वर्मा, आशीष गोयल आदि सभी उपस्थित थे।

-कमलेश शास्त्री पुरोहित

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य कालेज लुधियाना में 71वें...

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की समूह संस्थानों का सदैव यही प्रयत्न रहता है कि उनके विद्यार्थियों को पढ़ाई तथा खेलकूद जैसी गतिविधियों के साथ साथ उच्च आदर्शों से भी जोड़ा जाए। इस दो दिवसीय खेल मेले में प्रभजोत सिंह को लड़कों में और कोमल देवी को लड़कियों में बेस्ट एथलीट अथवा सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया।

समापन समारोह में खेलों के साथ साथ मनोरंजक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। महिलाओं की समस्याएवं व उनके निदान में आर्य समाज का योगदान विषय पर छात्राओं द्वारा एक सराहनीय प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत शानदार भांगड़ा ने खूब समां बांधा जिसे सभी अतिथियों व दर्शकों ने खूब सराहा।

कार्यक्रम के अंत में श्रोताओं एवं मेहमानों का धन्यवाद कालेज प्रबन्धकीय कमेटी की सचिव श्रीमती सतीशा शर्मा ने किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि मुख्य अतिथियों के रूप में पधारे अति विशिष्ट अतिथियों के व्यक्तित्व और उच्च आदर्शों से विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलेगी और निश्चय ही आर्य कालेज के प्रतिभावान विद्यार्थी भविष्य में वर्तमान समय से भी अधिक उपलब्धियां हासिल करेंगे। इस खेल मेले में आर्य समाज एवं आर्य संस्थाओं व कालेज की प्रबन्धक समिति से जुड़े अनेक प्रतिष्ठित सज्जनों ने भाग लिया जिसमें प्रमुख थे डा. विजय सरीन, श्री रमेश कौडा, श्री सुनील शर्मा, श्री रणवीर शर्मा, श्रीमती विनोद गांधी एवं अन्य कई महानुभाव उपस्थित थे।

डा. सविता उप्पल प्रिंसीपल
-आर्य कालेज

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज शहीद भगत सिंह...

अवसर पर ईश्वर चंद्र रामपाल, भूपेन्द्र उपाध्याय, सतपाल मल्होत्रा, ओम मल्होत्रा, विजय चावला, चौधरी हरीचंद, बैजनाथ, उर्मिल भगत, कुबेर शर्मा, नन्दिनी शर्मा, नालिनी उपाध्याय, केदारनाथ शर्मा, राजीव शर्मा, बलराज मिश्रा, रैना शर्मा, अमित सिंह, ललित मोहन कालिया, तिलकराज, स्वर्ण शर्मा, सुभाष आर्य, इन्दु आर्या, अमन आर्य, दिव्या आर्या, सुरिन्द्र अरोडा, अनिल मिश्रा, अर्चना मिश्रा, रानी अरोडा, पवन शुक्ला, रेणु कुन्दरा, राकेश मिश्रा, रविन्द्र आर्य, दिनेश शर्मा, राज सेठ, हरमेश शर्मा, लवलीन कुमार, अशोक शर्मा, प्रिया मिश्रा, मोहन लाल, मनु आर्य, अवनीश कुमार, विनोद तिवारी, संगीता तिवारी, राजेश बजाज उपस्थित थे।

हर्ष लखनपाल
महामंत्री आर्य समाज

वधू चाहिए

कद 5 फूट 3 इंच, योग्यता बी.टेक/एम.टेक (आई. आई. टी. बाम्बे), आयु 26 (DOB10-नवम्बर 1991), कालकाम कम्पनी हैदराबाद में कार्यरत, रंग गोरा लड़के हेतु सुन्दर सुशील एवं पढ़ी लिखी सुयोग्य वधू की आवश्यकता है।

सम्पर्क-9417142380

पृष्ठ 5 का शेष-हम यज्ञ, सत्संग...

कहते हैं कि जब हम ज्ञानी लोगों के, विद्वान् लोगों के सम्पर्क में रहते हैं, जब हम नित्य प्रति यज्ञ करने वाले, परोपकारियों के सम्पर्क में रहते हैं, तो उनके से गुण अपने आप ही हममें आने लगते हैं। अत: इस प्रकार के उपायों को व्यवहार में लाने वाले व्यक्तियों से परमपिता कह रहे हैं कि वास्तव में तूने वेदवाणी का उत्तम प्रकार से दोहन किया है। इन वाणियों का अच्छी प्रकार से प्रयोग किया है। इस का ठीक से सदुपयोग किया है। इनके प्रयोग से, इन के दोहन के कारण ही उन्नति पथ पर बढ़ते हुए, ऊपर उठते हुए परमेष्ठी के स्थान को प्राप्त किया है। इतना ही नहीं यज्ञशील बनकर तूने सब का पालन किया है। यज्ञशील बनकर तूने सबके कष्टों को दूर किया है। सब को निरोग किया है। इस कारण तू प्रजापति भी बन गया है।

आर्य कालेज लुधियाना में 71वें वार्षिक खेल मेले का आयोजन

आर्य कालेज लुधियाना के दो दिवसीय खेल मेले के समापन समारोह के अवसर पर पधारे सांसद रवनीत सिंह बिट्टू एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी का स्वागत करते हुये प्रिंसीपल डॉ. सविता उप्पल, श्रीमती राजेश शर्मा, श्री रमेश कौडा, सचिव श्रीमती सतीशा शर्मा, आर्य कालेज महिला विभागाध्यक्ष श्रीमती सूक्ष्म आहलूवालिया। जबकि चित्र दो में बैस्ट एथलीट प्रभजोत को सम्मानित करते हुये कालेज की सचिव श्रीमती सतीशा शर्मा, डा. विजय सरीन एवं अन्य।

आर्य कालेज लुधियाना में 10 और 11 मार्च 2018 को 71वां वार्षिक खेल मेला आयोजित किया गया। इस खेल मेले में लगभग 600 महिला व पुरूष वर्ग के खिलाड़ियों ने भाग लिया। खेल मेले के पहले दिन का उद्घाटन ए.डी.सी.पी. ट्रैफिक तथा खेलों में अर्जुन अवार्ड से सम्मानित श्री सुखपाल सिंह बराड़ ने किया जबकि कालेज की प्रबन्धकीय समिति की सचिव श्रीमती सतीशा शर्मा व सदस्य डा. विजय सरीन विशेषातिथि के रूप में इस मेले में शामिल हुये।

समापन समारोह में सांसद श्री रवनीत सिंह बिट्टू तथा विधायक श्री भारत भूषण आशू मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हुये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की उप प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा तथा श्री बलकार सिंह संधू कौंसलर भी इस मौके पर उपस्थित रहे।

आर्य कालेज की प्रिंसीपल डा. सविता उप्पल ने आए हुये सभी अतिथियों का स्वागत करते हुये कहा कि आर्य कालेज को विश्व स्तरीय प्रसिद्ध खिलाड़ियों के निर्माण करने का गौरव प्राप्त है। कालेज की शानदार वार्षिक खेल उपलब्धियों का वर्णन करते हुये उन्होंने बताया कि इस वर्ष कालेज के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने 22 स्वर्ण, 9 रजत एवं 11 कांस्य पदक प्राप्त किये हैं। इस अवसर पर खेल गतिविधियों के प्रधान प्रो. देवेन्द्र जोशी ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये बताया कि आर्य कालेज ने अपनी स्थापना से लेकर वर्तमान समय तक अन्य क्षेत्रों के साथ साथ देश को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के माहिर खिलाड़ी प्रदान किये हैं। खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुये मुख्यातिथि के रूप में पधारे सांसद श्री रवनीत सिंह बिट्टू ने अपने सम्बोधन में युवकों को खेल गतिविधियों से जुड़ने के लिये प्रेरित करते हुये कहा कि खेलों में भाग लेने से युवाओं में स्वास्थ्य, चरित्र, संयम जैसे गुणों के साथ साथ खेल भावना अथवा स्पोर्टसमैनशिप की भावना भी आती है। उन्होंने आर्य कालेज के इस खेल मेले के आयोजन और प्रतिभावान खिलाड़ियों की प्रस्तुति पर कालेज की सराहना की। इस अवसर पर उन्होंने अपने फंड से आर्य कालेज को पांच लाख रुपये की राशि का चैक भी भेंट किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव सम्वतसर के अवसर पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी विशेष रूप से पधारे। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने प्रधान जी का स्वागत किया।

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में 18 मार्च 2018 को आर्य समाज के स्थापना दिवस के अवसर पर साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान श्री नरेश कुमार चोपड़ा, श्रीमती दीपिका चोपडा परिवार सहित यज्ञ वेदी पर उपस्थित हुये। पंडित रमेश जी ने पवित्र पावन वेद मंत्रोच्चारण से यज्ञ सम्पन्न करवाया।

आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य वक्ता अश्विनी डोगरा जी सेवा निवृत्त दूरदर्शन अधिकारी ने आर्य समाज की स्थापना दिवस पर व नव सृष्टि सम्वतसर पर अपने विचार प्रकट करते हुये कहा कि आज के दिन आर्य समाज की स्थापना 1875 में मुम्बई में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने की थी। नव वर्ष की शुभकामनाएं देते हुये उन्होंने कहा कि हर तरफ हरियाली ही हरियाली है। सर्दी के मौसम के बाद बहुत ही सुन्दर फूल खिल रहे हैं। यही सृष्टि का नियम है और इसे ही नव वर्ष कहा जाता है और संसार का भी यही नियम है। आर्य समाज के मंत्री हर्ष लखनपाल ने कहा कि आर्य समाज की स्थापना दिवस नव सृष्टि सम्वत पर हमें गर्व होना चाहिये कि हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान है। सत्य सनातन वैदिक धर्म जब से सृष्टि हुई है तब से वेदों का प्रकाश हुआ।

स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके समाज से हम मानवों के लिये बहुत उपकार किया है। इस

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।